



Sh.virendra rana

05 Mar 1960

05:00 AM

Gohad

Model: Web-MyKundli

Order No: 119223201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 4-05/03/1960
दिन _____: शुक्र-शनिवार
जन्म समय _____: 05:00:00 घंटे
इष्ट _____: 55:56:16 घटी
स्थान _____: Gohad
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:25:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:16:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:43:44 घंटे
वेलान्तर _____: -00:11:49 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:34:37 घंटे
सूर्योदय _____: 06:37:29 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:18:55 घंटे
दिनमान _____: 11:41:26 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 21:06:40 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 19:06:31 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1881	फाल्गुन	15
पंजाबी	संवत : 2016	फाल्गुन	23
बंगाली	सन् : 1366	फाल्गुन	21
तमिल	संवत : 2016	मासी	22
केरल	कोल्लम : 1135	कुंभम	22
नेपाली	संवत : 2016	फाल्गुन	22
चैत्रादि	संवत : 2016	फाल्गुन	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2016	फाल्गुन	शुक्ल 8

पंचांग

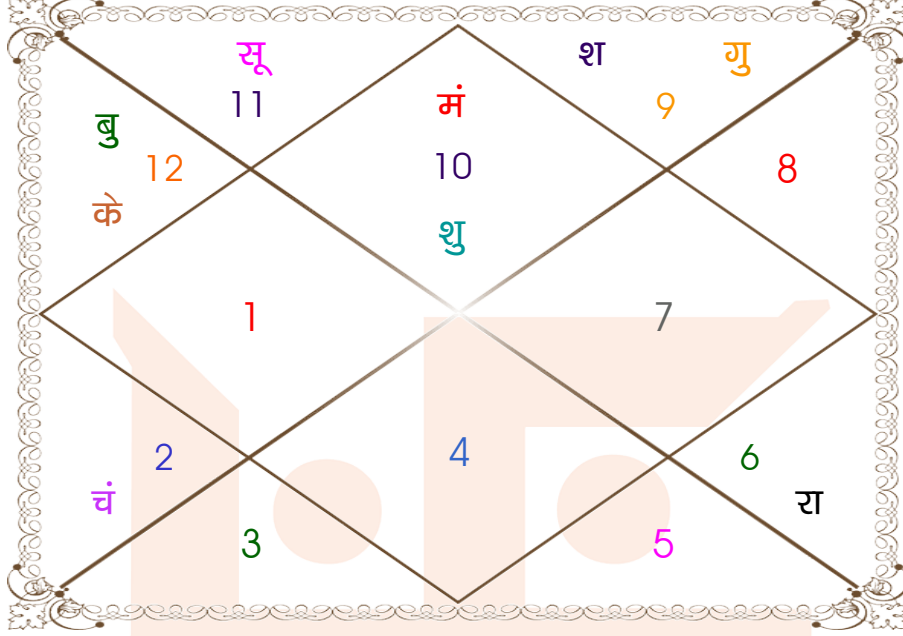
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
 तिथि समाप्ति काल _____ : 27:22:43
 जन्म तिथि _____ : 8
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:14:25 घंटे
 जन्म योग _____ : रोहिणी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
 योग समाप्ति काल _____ : 16:05:32 घंटे
 जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 14:13:16 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 29:23:58
 भभोग _____ : 67:09:36
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 5 वर्ष 7 मा 11 दि

घात चक्र

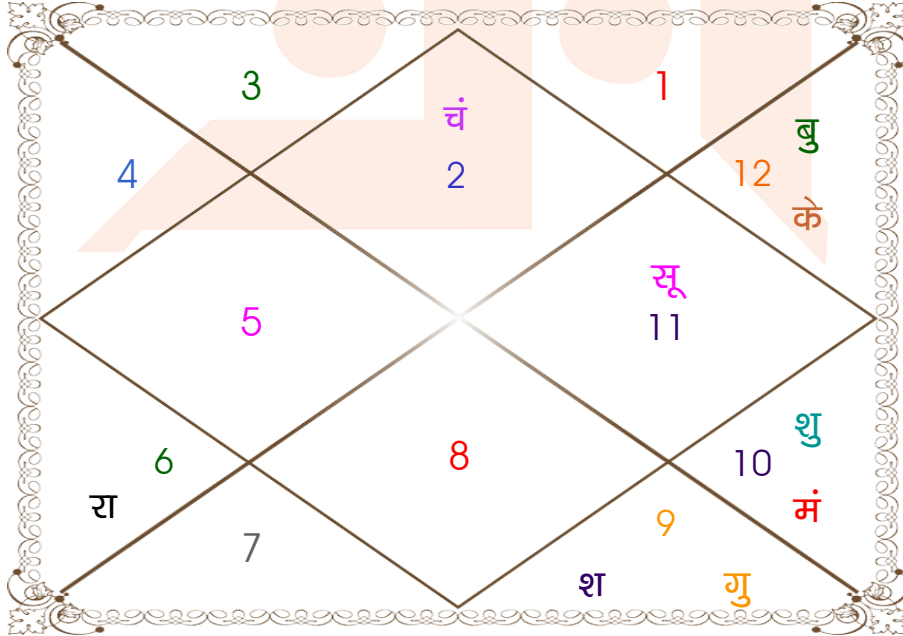
मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के बु		चं	
सू			
शु ल मं			
श गु			रा

लग्न कुण्डली

चं		के बु	
		सू	
		शु ल मं	
रा		गु श	

विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 7मा 11दि
चन्द्र

05/03/1960

16/10/2075

चन्द्र	15/10/1965
मंगल	15/10/1972
राहु	15/10/1990
गुरु	15/10/2006
शनि	15/10/2025
बुध	15/10/2042
केतु	15/10/2049
शुक्र	15/10/2069
सूर्य	16/10/2075

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 11मा 4दि
उल्का

08/02/2023

07/02/2029

उल्का	08/02/2024
सिद्धा	09/04/2025
संकटा	09/08/2026
मंगला	09/10/2026
पिंगला	08/02/2027
धान्या	09/08/2027
भ्रामरी	09/04/2028
भद्रिका	07/02/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



6

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 06:22:14	मकर 19:06:31
2	कुम्भ 06:22:14	कुम्भ 23:37:58
3	मीन 10:53:41	मीन 28:09:25
4	मेष 15:25:08	वृष 02:40:51
5	वृष 15:25:08	वृष 28:09:25
6	मिथुन 10:53:41	मिथुन 23:37:58
7	कर्क 06:22:14	कर्क 19:06:31
8	सिंह 06:22:14	सिंह 23:37:58
9	कन्या 10:53:41	कन्या 28:09:25
10	तुला 15:25:08	वृश्चिक 02:40:51
11	वृश्चिक 15:25:08	वृश्चिक 28:09:25
12	धनु 10:53:41	धनु 23:37:58

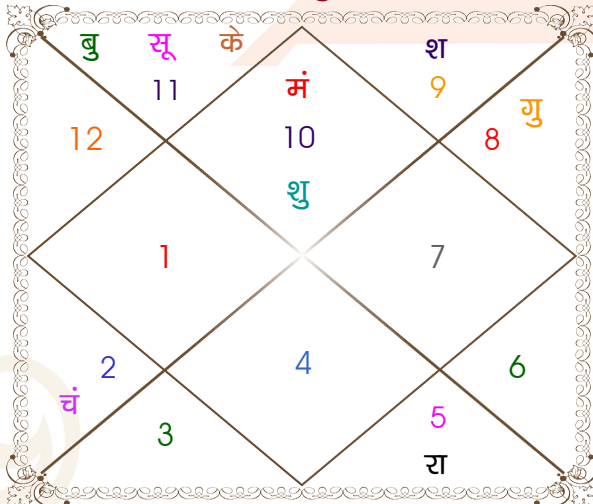
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	19:06:31
2	कुम्भ	28:38:16
3	मेष	04:05:33
4	वृष	02:40:51
5	वृष	27:07:23
6	मिथुन	21:08:12
7	कर्क	19:06:31
8	सिंह	28:38:16
9	तुला	04:05:33
10	वृश्चिक	02:40:51
11	वृश्चिक	27:07:23
12	धनु	21:08:12

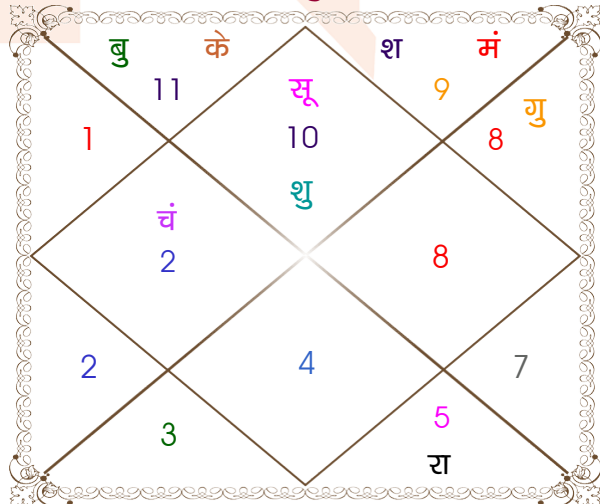
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 7 मास 11 दिन

चंद्र 10 वर्ष 05/03/1960 15/10/1965	मंगल 7 वर्ष 15/10/1965 15/10/1972	राहु 18 वर्ष 15/10/1972 15/10/1990	गुरु 16 वर्ष 15/10/1990 15/10/2006	शनि 19 वर्ष 15/10/2006 15/10/2025
00/00/0000	मंगल 13/03/1966	राहु 28/06/1975	गुरु 03/12/1992	शनि 18/10/2009
00/00/0000	राहु 01/04/1967	गुरु 21/11/1977	शनि 16/06/1995	बुध 27/06/2012
00/00/0000	गुरु 07/03/1968	शनि 27/09/1980	बुध 21/09/1997	केतु 06/08/2013
05/03/1960	शनि 16/04/1969	बुध 16/04/1983	केतु 28/08/1998	शुक्र 06/10/2016
शनि 15/08/1961	बुध 13/04/1970	केतु 04/05/1984	शुक्र 28/04/2001	सूर्य 18/09/2017
बुध 15/01/1963	केतु 09/09/1970	शुक्र 04/05/1987	सूर्य 14/02/2002	चंद्र 19/04/2019
केतु 16/08/1963	शुक्र 09/11/1971	सूर्य 28/03/1988	चंद्र 16/06/2003	मंगल 28/05/2020
शुक्र 16/04/1965	सूर्य 16/03/1972	चंद्र 27/09/1989	मंगल 22/05/2004	राहु 04/04/2023
सूर्य 15/10/1965	चंद्र 15/10/1972	मंगल 15/10/1990	राहु 15/10/2006	गुरु 15/10/2025

बुध 17 वर्ष 15/10/2025 15/10/2042	केतु 7 वर्ष 15/10/2042 15/10/2049	शुक्र 20 वर्ष 15/10/2049 15/10/2069	सूर्य 6 वर्ष 15/10/2069 16/10/2075	चंद्र 10 वर्ष 16/10/2075 00/00/0000
बुध 13/03/2028	केतु 14/03/2043	शुक्र 14/02/2053	सूर्य 02/02/2070	चंद्र 15/08/2076
केतु 10/03/2029	शुक्र 13/05/2044	सूर्य 14/02/2054	चंद्र 03/08/2070	मंगल 16/03/2077
शुक्र 09/01/2032	सूर्य 17/09/2044	चंद्र 16/10/2055	मंगल 09/12/2070	राहु 15/09/2078
सूर्य 14/11/2032	चंद्र 19/04/2045	मंगल 15/12/2056	राहु 03/11/2071	गुरु 15/01/2080
चंद्र 16/04/2034	मंगल 15/09/2045	राहु 16/12/2059	गुरु 21/08/2072	शनि 05/03/2080
मंगल 13/04/2035	राहु 03/10/2046	गुरु 16/08/2062	शनि 03/08/2073	00/00/0000
राहु 30/10/2037	गुरु 09/09/2047	शनि 15/10/2065	बुध 10/06/2074	00/00/0000
गुरु 05/02/2040	शनि 18/10/2048	बुध 15/08/2068	केतु 15/10/2074	00/00/0000
शनि 15/10/2042	बुध 15/10/2049	केतु 15/10/2069	शुक्र 16/10/2075	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 5 वर्ष 7 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु 04/04/2023 15/10/2025	बुध - बुध 15/10/2025 13/03/2028	बुध - केतु 13/03/2028 10/03/2029	बुध - शुक्र 10/03/2029 09/01/2032	बुध - सूर्य 09/01/2032 14/11/2032
गुरु 05/08/2023 शनि 30/12/2023 बुध 09/05/2024 केतु 02/07/2024 शुक्र 03/12/2024 सूर्य 18/01/2025 चंद्र 05/04/2025 मंगल 29/05/2025 राहु 15/10/2025	बुध 17/02/2026 केतु 09/04/2026 शुक्र 03/09/2026 सूर्य 17/10/2026 चंद्र 29/12/2026 मंगल 18/02/2027 राहु 30/06/2027 गुरु 26/10/2027 शनि 13/03/2028	केतु 03/04/2028 शुक्र 02/06/2028 सूर्य 20/06/2028 चंद्र 21/07/2028 मंगल 11/08/2028 राहु 04/10/2028 गुरु 21/11/2028 शनि 18/01/2029 बुध 10/03/2029	शुक्र 29/08/2029 सूर्य 20/10/2029 चंद्र 14/01/2030 मंगल 16/03/2030 राहु 18/08/2030 गुरु 03/01/2031 शनि 16/06/2031 बुध 09/11/2031 केतु 09/01/2032	सूर्य 24/01/2032 चंद्र 19/02/2032 मंगल 08/03/2032 राहु 24/04/2032 गुरु 04/06/2032 शनि 23/07/2032 बुध 05/09/2032 केतु 24/09/2032 शुक्र 14/11/2032
बुध - चंद्र 14/11/2032 16/04/2034	बुध - मंगल 16/04/2034 13/04/2035	बुध - राहु 13/04/2035 30/10/2037	बुध - गुरु 30/10/2037 05/02/2040	बुध - शनि 05/02/2040 15/10/2042
चंद्र 27/12/2032 मंगल 27/01/2033 राहु 14/04/2033 गुरु 22/06/2033 शनि 12/09/2033 बुध 24/11/2033 केतु 25/12/2033 शुक्र 21/03/2034 सूर्य 16/04/2034	मंगल 07/05/2034 राहु 30/06/2034 गुरु 18/08/2034 शनि 14/10/2034 बुध 04/12/2034 केतु 25/12/2034 शुक्र 24/02/2035 सूर्य 14/03/2035 चंद्र 13/04/2035	राहु 31/08/2035 गुरु 02/01/2036 शनि 28/05/2036 बुध 07/10/2036 केतु 01/12/2036 शुक्र 05/05/2037 सूर्य 20/06/2037 चंद्र 06/09/2037 मंगल 30/10/2037	गुरु 18/02/2038 शनि 29/06/2038 बुध 24/10/2038 केतु 11/12/2038 शुक्र 28/04/2039 सूर्य 09/06/2039 चंद्र 17/08/2039 मंगल 04/10/2039 राहु 05/02/2040	शनि 10/07/2040 बुध 26/11/2040 केतु 23/01/2041 शुक्र 05/07/2041 सूर्य 24/08/2041 चंद्र 13/11/2041 मंगल 10/01/2042 राहु 06/06/2042 गुरु 15/10/2042
केतु - केतु 15/10/2042 14/03/2043	केतु - शुक्र 14/03/2043 13/05/2044	केतु - सूर्य 13/05/2044 17/09/2044	केतु - चंद्र 17/09/2044 19/04/2045	केतु - मंगल 19/04/2045 15/09/2045
केतु 24/10/2042 शुक्र 18/11/2042 सूर्य 25/11/2042 चंद्र 08/12/2042 मंगल 17/12/2042 राहु 08/01/2043 गुरु 28/01/2043 शनि 20/02/2043 बुध 14/03/2043	शुक्र 24/05/2043 सूर्य 14/06/2043 चंद्र 19/07/2043 मंगल 13/08/2043 राहु 16/10/2043 गुरु 12/12/2043 शनि 17/02/2044 बुध 18/04/2044 केतु 13/05/2044	सूर्य 19/05/2044 चंद्र 30/05/2044 मंगल 06/06/2044 राहु 25/06/2044 गुरु 12/07/2044 शनि 02/08/2044 बुध 20/08/2044 केतु 27/08/2044 शुक्र 17/09/2044	चंद्र 05/10/2044 मंगल 18/10/2044 राहु 19/11/2044 गुरु 17/12/2044 शनि 20/01/2045 बुध 19/02/2045 केतु 03/03/2045 शुक्र 08/04/2045 सूर्य 19/04/2045	मंगल 27/04/2045 राहु 20/05/2045 गुरु 09/06/2045 शनि 02/07/2045 बुध 23/07/2045 केतु 01/08/2045 शुक्र 26/08/2045 सूर्य 02/09/2045 चंद्र 15/09/2045

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

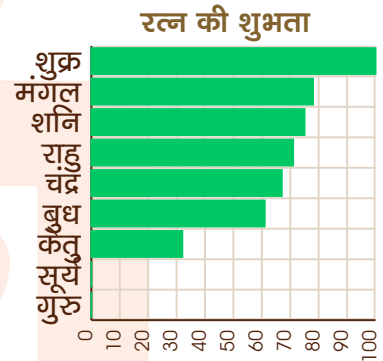


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	78%	स्वास्थ्य, सुख, धनार्जन
नीलम	शनि	75%	कम खर्च, स्वास्थ्य, धन
गोमेद	राहु	71%	भाग्योदय, पराक्रम
मोती	चंद्र	67%	सन्तति सुख, दम्पति
पन्ना	बुध	61%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	32%	पराक्रम हानि, व्यय
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	15/10/1965	6%	80%	78%	67%	0%	100%	75%	58%	7%
मंगल	15/10/1972	6%	74%	91%	47%	0%	100%	75%	58%	44%
राहु	15/10/1990	0%	55%	66%	61%	0%	100%	81%	83%	7%
गुरु	15/10/2006	6%	74%	84%	47%	2%	95%	75%	71%	32%
शनि	15/10/2025	0%	55%	66%	67%	0%	100%	88%	77%	7%
बुध	15/10/2042	6%	55%	78%	73%	0%	100%	75%	71%	32%
केतु	15/10/2049	0%	55%	84%	61%	0%	100%	62%	58%	53%
शुक्र	15/10/2069	0%	55%	78%	67%	0%	100%	81%	77%	44%
सूर्य	16/10/2075	19%	74%	84%	61%	0%	95%	62%	58%	7%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1960-02/02/1961 17/09/1961-08/10/1961	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/06/1968-17/06/1968 07/03/1969-28/04/1971	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
सुख हानि
सन्तति सुख
शत्रु व रोग
दुर्घटना



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्य करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि और राहु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्वयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(15/10/2006 - 15/10/2025)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 15/10/2006 को आरम्भ और 15/10/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बारीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

**महादशा :- बुध
(15/10/2025 - 15/10/2042)**

बुध की महादशा 15/10/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 15/10/2042 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध तृतीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान कुछ मामूली वाधाओं को छोड़ जीविका में प्रगति तथा धन की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपकी छोटी यात्राएं होंगी तथा पराक्रम और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचुर मात्रा में होगी। फिर भी आप सतर्क होंगे और जरूरत से अधिक परिश्रम नहीं करेंगे। गले की समस्या, ब्रोंकाइटिस, स्नायविक समस्या तथा गठिया आदि बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु, आवश्यक उपाय कर इन व्याधियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपको आर्थिक सफलता मिलेगी और आपको किसी लाभदायक सरकारी पद की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने शत्रुओं तथा विरोधियों से लाभ मिलेगा और मुकदमों में विजय मिलेगी। आपको संचार-माध्यमों के क्षेत्र में

लाभ मिलेगा। जीविका-व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, सेल्समैन, शिक्षण, ट्रेवल एजेंट, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैमानिकी, चिकित्सक तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, इस्तनिर्भित आदि वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा आप अपनी बौद्धिक उपलब्धि, समस्या-समाधान की क्षमता तथा कठिन परिश्रम के कारण पुरस्कृत किए जाएंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, आय और लाभ में वृद्धि होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। कार्यों में सफलता और विरोधियों पर विजय के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति भी हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आप अपना पुराना वाहन बेच सकते हैं। बुध की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली नुकसान हो सकता है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उस दशा में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा के माध्यम से आपको कुछ आर्थिक लाभ होगा। गणित, विज्ञान, विधि, ललितकला, संचार-माध्यम, पत्रकारिता, लेखन तथा साहित्य में आपकी रुचि हो सकती है। आप हस्तकला तथा वाक्पटुता में कुशल होंगे। आप तेज, कूटनीतिक, बहुमुखी एवं विज्ञान में रुचि रखने वाले हैं।

परिवार :

आपके बच्चों के लिये समय समृद्धि-दायक रहेगा और उनके लाभ तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की यात्रा होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपकी माता की कुछ यात्रा, व्यय तथा स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या होगी जबकि आपके पिता को व्यापार में तथा साझेदार से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति मिलेगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को सट्टे में सफलता तथा लाभ मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। आप सामाजिक व लोकप्रिय होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपको संचार-माध्यम से लाभ और भाइयों से सुख मिलेगा जबकि केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यापार में लाभ और विवाद होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सट्टे से लाभ तथा बच्चों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आराम मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रहेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा होगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी तथा लाभ मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(15/10/2025 - 13/03/2028)**

आपके लिए बुध की महादशा 15/10/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 15/10/2025 को प्रारंभ होकर 13/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपकी लघुयात्राएं हो सकती हैं। अध्ययन, अध्यापन और लेखन आदि से लाभ हो सकता है। व्यापार में दक्ष रहेंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। मानसिक शक्ति उत्तम होगी। धन प्राप्त करेंगे। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। साहित्यिक कार्य के लिए उत्तम समय है।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे, कला में रुचि होगी। आपके पिता को व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ होगा। माता की ध्यान और साधना में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, धन, विवाह, यात्रा, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, सम्मान मिलेगा और शिक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को धनलाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की मामूली बीमारी हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - केतु
(13/03/2028 - 10/03/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 15/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/03/2028 को प्रारंभ होकर 10/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवादों के कारण मन विचलित हो सकता है। धन और सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। पड़ोसियों से संबंध अच्छे रहेंगे। समाज और व्यापार जगत् में प्रसिद्ध होंगे। केतु की नवम भाव पर दृष्टि के कारण पिता से संबंध उत्तम रहेंगे, किस्मत साथ देगी। यात्रा हो सकती है। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, सफल होंगे, व्यापार में वृद्धि होगी। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, विरोधियों पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, लोगों द्वारा सहायता, निवेश से लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सौभाग्यशाली रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बाहों में दर्द की शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(10/03/2029 - 09/01/2032)

आपके लिए बुध की महादशा 15/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 10/03/2029 को प्रारंभ होकर 09/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके पास सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। उत्तम वस्त्र, आभूषण और इत्र आदि क्रय करेंगे। उच्चपद पर आसीन होंगे। विवाहित जीवन सुखद रहेगा। विवाह हो सकता है। धनार्जन उत्तम होगा। सब खुशियां नसीब होंगी। जीवनसाथी के माध्यम से धनागम होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। व्यापार में फायदा होगा। दूसरों को दिया कर्ज वापस मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। माता के नये मददगार मित्र बनेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, उत्तम शिक्षा, धन संचय, सुख-साधन, यात्रा और छोटे भाई-बहनों से सुख का संकेत है।

आपकी संतान प्रसन्न रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लाभकारी यात्राएं होंगी, प्रसिद्धि और समृद्धि की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है, अचानक लाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।